Postal Regd. No. :
HP/115/SML/2020-22
< Postage Prepaid >

www.bakhabarconnect.com

शिमला | मंगलवार | 26 अक्तूबर - 1 नवम्बर 2022

• वर्ष 9 • अंक 10 • पृष्ठ 4 • साप्ताहिक • मूल्य 1/-
आर.एन.आई. नं. एचपीएमयूएल / 2014/58822

] विचार »

मन की एकाग्रता ही समग्र ज्ञान है।

- स्वामी विवेकानंद

बाख़बर कनेक्ट

@bakhabarconnect

कार्रवाई, सरगोशी से शाया होने तक

राज्यपाल ने भुन्तर स्थित . . .
4

सरदार पटेल के विचार व चिंतन आज अधिक प्रासंगिक : राज्यपाल

देवेन्द्र कश्यप
मंडी . बाख़बर कनेक्ट

राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने सरदार वल्लभभाई पटेल के आदर्शों, विचारों और चिंतन को देशहित में पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता पर बल दिया। राज्यपाल मंडी स्थित सरदार पटेल विश्वविद्यालय में 'सरदार वल्लभभाई पटेल की भारतीय राजनीति और राष्ट्र निर्माण में भूमिका' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। आर्लेकर ने कहा कि मौजूदा परिप्रेक्ष्य में सरदार पटेल के जीवन व्यक्तित्व, विचारों एवं कार्यों को स्मरण करने की आवश्यकता है। देश को आजादी दिलाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है और वे जीवन भर देशहित में संघर्ष करते रहे। उनका जीवन राष्ट्रीय एकता के लिए समर्पित रहा।

राज्यपाल ने कहा कि सरदार पटेल की जयंती को 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया जिसके लिए उन्होंने अनेक कठिनाइयों और चुनौतियों का सामना भी किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीयता की इस भावना को आगे ले जाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि भारत जमीन का एक टुकड़ा मात्र नहीं है। राष्ट्रीयता की भावना हमारी संस्कृति व परंपरा से जुड़ी है, जिसे हमने कभी नहीं खोया। सरदार पटेल ने इस एकता को बनाए रखने का कार्य किया। उनका संदेश आज भी प्रासंगिक है तथा उनके विचारों को आगे ले जाने की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय को सरदार पटेल विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है। इसलिए विश्वविद्यालय का दायित्व है कि वह सरदार पटेल के विचारों, चिंतन और संदेश को आगे बढ़ाए। उन्होंने कहा कि यह संस्थान इन विचारों को अंगीकार कर विकास के पथ पर आगे बढ़े।

आबकारी विभाग की अवैध शराब के खिलाफ कार्रवाई जारी

निशा देवी
शिमला . बाख़बर कनेक्ट

राज्य कर एवं आबकारी विभाग के आयुक्त यूनुस ने यहां बताया कि विभाग द्वारा आदर्श चुनाव संहिता के मद्देनजर अवैध शराब के खिलाफ कार्रवाई जारी है। विभाग द्वारा गठित कार्य बल ने सूचना के आधार पर मण्डी जिला के भांबला चौक में एक बन्द पड़ी दुकान के निरीक्षण के दौरान 53 पेटी व चार बोतल आईएमएफएल (फॉर सेल इन चण्डीगढ़/पंजाब) पाई गई। कार्यबल द्वारा नियमानुसार कार्यवाही करते हुए इस मामले को पुलिस थाना हटली के सुपुर्द कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि कार्यबल ने पिछले तीन

शेष पृष्ठ दो पर

वरिष्ठ नागरिकों को घर पर मत देने का अभियान शुरू

मंडी : विधानसभा चुनाव के दौरान 80 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों तथा दिव्यांगों की सुविधा के लिए भारत निर्वाचन आयोग ने मतदान हेतु घर-घर जाकर पोस्ट बैलट की सुविधा के लिए मोबाईल मतदान अधिकारियों की टीमें गठित की है । यह जानकारी निर्वाचन अधिकारी एवं एसडीएम सदर रितिका जिंदल ने देते हुए बताया कि इस उद्देश्य के लिए सदर विधानसभा क्षेत्र में 12 टीमें गठित की है । उन्होंने बताया कि अभियान के तहत आज मंगलवार को 26 मतदान केंद्रों के तहत आने वाले 250 दिव्यांगजनों व वरिष्ठ नागरिकों के मत पत्र लिए गए।

चुनावी निगरानी टीम ने डमटाल में गाड़ी से पकड़ा 2 करोड़ रुपये कैश

अजय कश्यप
धर्मशाला . बाख़बर कनेक्ट

कांगड़ा जिले के सीमांत क्षेत्र डमटाल में चुनावों के मद्देनजर लगाए गए नाके पर पुलिस की एक टीम ने एक गाड़ी से 2 करोड़ रुपये कैश बरामद किया है। मामले में आगे तफ्तीश जारी है। जिला निर्वाचन अधिकारी (उपायुक्त) डॉ. निपुण जिंदल ने बताया कि चुनावों को शांति पूर्वक संपन्न कराने के लिए प्रशासन पूरी मुस्तैदी से काम कर रहा है। जगह जगह नाके लगा कर गाड़ियों की आवाजाही पर नजर रखी जा रही है। स्टेटिक निगरानी दल और पुलिस टीमें विभिन्न जगहों पर गाड़ियों की जांच के साथ साथ संदिग्ध गतिविधियों पर पैनी नजर रख रहे हैं।

डॉ. निपुण जिंदल ने स्वयं शनिवार को ज्वाली क्षेत्र के ज्वाली पोलिंग बूथ, जो संवेदनशील की श्रेणी में है, पर जाकर आसपास के लोगों और व्यापारियों से बातचीत की तथा चुनावी प्रक्रिया से जुड़ी उनकी समस्याओं और असामाजिक तत्वों की गतिविधियों को लेकर जानकारी हासिल की। उन्होंने आमजन को निर्भीक होकर मतदान करने को लेकर प्रशासन की ओर से पूरी व्यवस्था चाक चौबंद रखने का भरोसा दिलाया। इस मौके पर अर्धसैनिक बल और पुलिस की टुकड़ी ने फ्लैग मार्च निकाल कर लोगों को भयमुक्त होकर मतदान करने का संदेश दिया।

एसजेवीएनएल : सतर्कता जागरूकता सप्ताह का शुभारम्भ

बाख़बर न्यूज
झाकड़ी . बाख़बर कनेक्ट

केन्द्रीय सतर्कता आयोग के दिशा-निर्देशानुसार भ्रष्टाचार मुक्त भारत-विकसित भारत थीम पर आधारित 31 अक्तूबर से 06 नवम्बर-2022 तक मनाए जाने वाले सतर्कता जागरूकता सप्ताह का शुभारम्भ नाथपा झाकड़ी हाइड्रो पावर स्टेशन में मुख्य महाप्रबन्धक (मानव संसाधन) प्रवीन सिंह नेगी द्वारा कर्मियों को कार्यक्षेत्र में कार्य के प्रति पारदर्शिता एवं सत्यनिष्ठा के साथ कार्य को सम्पन्न करने हेतु सतर्कता-शपथ दिलाकर किया गया। इस

शेष पृष्ठ दो पर

बाख़बर न्यूज
बायल . बाख़बर कनेक्ट

रामपुर एचपीएस ने बायल में फिट इंडिया फ्रीडम रन 3.0 का आयोजन किया। यह कार्यक्रम आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार के तत्वावधान में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में वजीर बावड़ी से ऑफिस कॉम्पलैक्स बायल तक करीब सात किलोमीटर की मैराथन दौड़ आयोजित की गई। इसमें रामपुर एचपीएस में कार्यरत कर्मचारियों उनके परिवारजनों तथा ठेका मजदूरों ने बढ़ चढ़ कर लगभग

शेष पृष्ठ दो पर

बाख़बर न्यूज
बिथल . बाख़बर कनेक्ट

लूहरी जलविद्युत परियोजना चरण-1 के बिथल स्थित कार्यालय में राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। लूहरी परियोजना प्रमुख सुनील चौधरी ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राष्ट्रीय एकता दिवस पर शपथ दिलाई। उन्होंने अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपने कार्य के प्रत्येक क्षेत्र में ईमानदारी एवं पारदर्शिता बनाए रखने और अपने देश की आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के

शेष पृष्ठ दो पर

. बाख़बर कनेक्ट .

[सम्पादकीय]

समाज और देश का उद्धार उद्देश्य

स्वामी विवेकानन्द संभवत: भारत के एकमात्र ऐसे संत हैं, जो अध्यात्म, दर्शन और देशभक्ति जैसे गंभीर गुणों के साथ-साथ युवा शक्ति के भी प्रतीक हैं। उनकी छवि भले ही एक धर्मपुरूष और कर्मयोगी की है किन्तु उनका वास्तविक उद्देश्य अपने देश के युवाओं को रचनात्मक कर्म का मार्ग दिखाकर विश्व में भारत के नाम का डंका बजाना था। उन्हें केवल 4 दशक का जीवन मिला और इसी अल्प अवधि में उन्होंने न केवल अपने समय की युवा पीढ़ी में अपनी वाणी, कर्म एवं विचारों से नई ऊर्जा का संचार किया बल्कि बाद की पीढ़ियों के लिए भी वे आदर्श बने हुए हैं। वे युवाओं के प्रिय इसलिए हैं कि बचपन से लेकर जीवन के अंतिम क्षण तक उनमें प्रश्न और जिज्ञासा का भाव जीवित रहा।

स्वामी विवेकानन्द का सबसे बड़ा गुण था तर्कशील और वैज्ञानिक दृष्टिकोण। अपने इसी गुण के बल पर उन्होंने परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व को व्यवहार की तुला पर ही तोल कर सुलझाया। वे अद्वैतवादी होते हुए भी द्वैत मत के अनुसार काली पूजा कर सकते थे। विवेकानन्द का मूल उद्देश्य समाज और देश का उद्धार करना था और इसमें उनके व्यक्तिगत आग्रह या दृष्टिकोण कभी बाधक नहीं बने। तभी तो वे युवकों से यह तक कहने की हिम्मत जुटा सके कि घर बैठ कर गीता पढ़ने की बजाय मैदान में फुटबाल खेल कर आप ईश्वर को जल्दी प्राप्त कर सकते हैं। वे कहा करते थे कि योग वही कर सकता है जिसने भोग किया हो। भोग के बाद ही योग की आवश्यकता होती है।

यह तर्कशीलता और संतुलित दृष्टि आज के युवा स्वामी विवेकानन्द के जीवन से सीख सकते हैं। स्वामी विवेकानन्द दर्शनिक तथा युगदृष्टा के साथ-साथ समाज के उत्थान के प्रति समर्पित कर्मयोगी और समाजसेवी संत थे। उनका जीवन केवल आज की पीढ़ी ही नहीं, आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा। स्वामी जी सच्चे युवा संन्यासी, समाज चिंतक तथा राष्ट्र सेवक थे, जिनका जीवन आज की पीढ़ी को दिशा देने में सहायक हो सकता है।

हम मानसिक दासत्व को एक मनोवैज्ञानिक रोग मान सकते हैं। अनेक प्रकार के भ्रम, अभद्र-कल्पनाएँ, निराशा, निरुत्साह इत्यादि मनः क्षेत्र में, आत्महीनता की जटिल ग्रन्थि उत्पन्न कर देते हैं। कालाँतर में ये ग्रन्थियाँ अत्यन्त शक्तिशाली हो उठती हैं। फिर दिन प्रतिदिन के विविध कार्यों में इन्हीं की प्रतिक्रिया चलती रहती है। हमारे डरपोकपन के कार्य प्रायः इसी ग्रन्थि के परिणाम स्वरूप होते हैं।

मानसिक दासत्व को एक मनोवैज्ञानिक रोग

मानसिक दासता सब प्रकार की दासताओं की जननी है। जब शरीर का चालक मन अशक्त है तो शरीर का अणु-अणु अपाहिज है। उसकी शक्ति को प्रकाशित होने का कोई विशिष्ट मार्ग नहीं, उसका कोई निश्चित उद्देश्य नहीं। वह एक ऐसी नौका है जो जिधर चाहे बहक सकती है।

समस्त मानव जीवन की प्रवर्त्तक 'भावनाएँ' होती हैं। इन भावों का अनुसरण हमारी मूल प्रवृत्तियाँ किया करती हैं। भावनाएँ मन में विनिर्मित होती हैं। उनका उच्चाशय या निंदा स्वरूप मन की प्रेरक शक्तियों पर अधिष्ठित है।

मन के अपाहिज हो जाने पर आत्मा जड़ से भी गया बीता हो जाता है। उसकी महत्वाकाँक्षा का निरन्तर क्षय होता रहता है। आशाओं पर तुषारापात होता है। ऐसा व्यक्ति नहीं जानता कि वह क्या है? उसका वास्तविक स्वरूप क्या है? उसे किस दिशा की ओर अग्रसर होना है? दासता की कुलिश-कठोर बेड़ियों में जकड़ा हुआ मन स्वयं अपना ही नहीं, अपने स्वामी का भी सर्वनाश कर देता है।

जो कुछ न्यूनता, भय, भ्राँति तुम अपने आप में पाते हो उसका कारण दिमागी गुलामी है। अपने विषय में जो डरपोक विचारधारा तुम रखते हो, हीनत्व की ग्रन्थि जिसका निर्माण तुमने भयभीत हो कर लिया है। वह तुम्हारी गुलामी का कडुआ परिणाम है। अपने विषय में जो धारणाएँ तुमने निर्मित कर ली हैं। उनका आदि स्त्रोत तुम्हारी मानसिक दासता ही है। अपने अंतर प्रदेश में तुमने अपना जो चित्र खींचा हैं या तुम्हारे ऊपर दूसरों का जो जादू चलता है, वह स्वयं तुम्हारी मानसिक दासता की प्रतिच्छाया है। मानसिक गुलामी ही हमें दरिद्र, दु:खी, चिंतित एवं आपत्तियों का शिकार बना रही है।

हम दूसरों को डरपोक देखते हैं तो समझ लेते है कि ऐसे ही हमें भी होना चाहिए। ऐसा ही मनुष्य का वास्तविक स्वरूप है। हम अपने चारों और ऐसा ही कुत्सित वातावरण देखते हैं। हम विगत कटु अनुभवों को अपेक्षाकृत अधिक महत्व देते हैं। हम स्वयं विचार शक्ति का उपयोग न कर विचार की गति को पंगुर डालते हैं। हम स्वयं निज मानसिक शक्ति का उपयोग न कर उदाहरण, दूसरे की प्रणाली पर निज जीवन को अधिष्ठित कर देते हैं। हम सोचते हैं कि जो हमारे पूर्वज कर गए हैं, जो हमारे नेतागण चरितार्थ कर रहें हैं, जो कुछ हमारे भ्राताओं ने अर्जन किया है वही हमारा भी साध्य है। उसी को हमें प्राप्त करना चाहिए। हम अपने वातावरण से दासता ही दासता एकत्रित करते हैं। मन में कूड़ा-कर्कट एकत्रित करते रहते हैं, कालान्तर में मन का वातावरण कलुषित हो जाता है। हमारा समाज, कभी हमारा गृह, कभी हमारा वातावरण या जीविका उपार्जन का कार्य मानसिक दासता का सहायक बन जाता है तथा हमें दीन दुनिया कहीं का भी नहीं छोड़ता । कृत्रिम साधनों द्वारा मन का विकास रुक जाना ही मानसिक दासता है।

हम मानसिक दासत्व को एक मनोवैज्ञानिक रोग मान सकते हैं। अनेक प्रकार के भ्रम, अभद्र-कल्पनाएँ, निराशा, निरुत्साह इत्यादि मन: क्षेत्र में, आत्महीनता की जटिल ग्रन्थि उत्पन्न कर देते हैं। कालाँतर में ये ग्रन्थियाँ अत्यन्त शक्तिशाली हो उठती हैं। फिर दिन प्रतिदिन के विविध कार्यों में इन्हीं की प्रतिक्रिया चलती रहती है। हमारे डरपोकपन के कार्य प्राय: इसी ग्रन्थि के परिणाम स्वरूप होते हैं।

अनेक मन गढ़न्त विरुद्ध संस्कार स्मृति पटल पर अंकित रहते हैं। पुरानी असफलताएँ, अप्रिय अनुभव, अव्यक्त मन से चेतन में प्रवेश करती हैं तथा प्रत्येक अवसर पर अपनी रोशनी फेंका करती हैं। जैसे एक बारीक कपड़े से प्रकाश की किरणें हल्की-हल्की छन कर बाहर आती हैं उसी प्रकार आत्म हीनता तथा दासत्व की ग्रंथियों की झलक प्राय: प्रत्येक कार्य में प्रकट होकर उसे अपूर्ण बनाया करती हैं। कभी-2 मनुष्य की शारीरिक निर्बलता, कमजोरियाँ, व्याधियों, अंग-प्रत्यंगों की छोटाई मोटाई, सामाजिक परिस्थितियों, निर्धनता, देश की कमजोरियाँ सब मानसिक दासत्व की अभिवृद्धि किया करते हैं। भारत में मानसिक दासत्व का कारण अंधकारमय वातावरण, तथा पाशविक वृत्तियों का अनाचार है। समय-समय पर देश में होने वाले आन्दोलनों से मानसिक दासत्व में भी न्यूनता या अभिवृद्धि का क्रम चला करता है।

वर्तमान रूप में व्यवहृत हमारा धर्म मानसिक दासता का मित्र बना हुआ है। मनुष्य का मन प्रत्येक तत्व को समझने, मनन करने के लिए प्रदान किया गया है। वह सोच समझ कर प्रत्येक वस्तु ग्रहण करें, यों ही प्रत्येक तत्व को अन्धों की तरह ग्रहण न करे- यही इष्ट है। धर्म के आधुनिक रूप ने मानव मन को अत्यन्त संकुचित डरपोक बना दिया है। किताब कलमा, जादू, टोना, तीर्थ न जाने कितनी आफतें मानव मन पर सवार हैं। वह धार्मिक शृंखलाओं के कारण इधर से उधर टस से मस नहीं हो पाता। हजार आदमी उसके ऊपर उँगलियाँ उठाने को प्रस्तुत हैं। अत: बेचारे को अन्य व्यक्तियों का अनुकरण करना होता है।

अनुकरण अबोध के लिए उपयुक्त हो सकता है किन्तु विवेकशील को उस जंजीर में बाँधने से उसके मन: क्षेत्र में प्रबल उत्तेजना उत्पन्न होती हैं। इस प्रकार मन की गुलामी उत्पन्न होती है। जब मन उत्तम तथा निकृष्ट में विवेक न कर सके तो उसे 'दास' कहेंगे। उसे तो स्वच्छता पूर्वक निज कर्म करना चाहिए। यदि मनुष्य का मन स्वतन्त्र रूप से विवेक की शक्ति नहीं रखता तो वह किसी अन्य शक्ति के वश में अवश्य रहेगा। स्वयं जब मन को अपनी इच्छा शक्ति पर प्रभुत्व नहीं तो उस पर किसी विजातीय शक्ति का प्रभुत्व अवश्य रहेगा।

मन को स्वाधीनता दीजिए। उसे चारों ओर फैलने का अवसर दीजिए। मानसिक स्वतंत्रता से ही मनुष्य में दैवी गुणों का प्रादुर्भाव होता है। मन को स्वच्छंदता पूर्वक विचारने की, मनन करने की स्वतंत्रता दीजिए तो वह आपका सच्चा मित्र-सलाहकार बन जायगा। वह निकृष्ट भोगेच्छाओं में परितृप्त न होगा। वह अन्य व्यक्तियों की कृपा पर से आश्रित न रहेगा। मानसिक स्वतन्त्रता प्राप्त करते ही मनुष्य का संसार के प्रति दृष्टिकोण बदल जाता है। मानसिक स्वच्छन्दता के बिना मनुष्य प्रसन्नचित्त नहीं रह सकता।

विश्व में सबसे अधिक महान कार्य मन के शक्तियों को बढ़ाना है। तुम्हारा अभ्यन्तर प्रदेश अनन्त और अपार है। अभ्यास तथा मनन द्वारा तुम अपनी नैसर्गिक शक्ति को प्राप्त कर सकते हो। स्मरण रहे, तुम्हें अपना विकास करना है। अल्पक्ष नि:सत्व नहीं बने रहना है। तुम्हें उचित है कि निज सामर्थ्यों में विश्वास एवं श्रद्धा रखना सीखो। सदा सर्वदा आन्तरिक मन की भावनाओं के प्रति लक्ष दिये रहो। यह मत सोचो कि हमें तो इतना ही विकसित होना है, वरन् यह सोचो कि अब अभिवृद्धि का वास्तविक समय आया है। अपनी विशालता, अतुल सामर्थ्य करो। मानसिक दासता से छुटकारा पाओ और संसार में विजयी योद्धा की तरह जीवन जिओ।

॥ प्रथम पृष्ठ के शेष >

एसजेवीएनएल : नाथपा झाकड़ी . . .

अवसर पर उप महाप्रबन्धक (सतर्कता) सुरेखा राव द्वारा समस्त कर्मियों को सतर्कता जागरूकता सप्ताह की रूपरेखा से रू-ब-रू करवाया गया एवं इस अवसर पर सतर्कता विभाग द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में सभी कर्मचारियों, उनके परिवार के सदस्य, ठेकेदारों, स्कूल और महविद्यालय के विद्यार्थियों को इन प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लेने का आह्वान भी किया।

एसजेवीएनएल : रामपुर . . .

250 प्रतिभागियों ने भाग लिया। गौरतलब है कि दो राष्ट्रीय त्यौहारों स्वतंत्रता दिवस और गांधी जयंती को महत्व देने के लिए युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा वर्ष 2020 में फिट इंडिया फ्रीडम रन की शुरूआत की गई थी।

इस रन का उद्देश्य भारतवासियों के अच्छा स्वास्थ्य एवं तंदरूस्ती के लिए सैर अथवा दौड़ के प्रति रूचि पैदा करना है।

एसजेवीएनएल : लूहरी

लिए अपना योगदान करने का आह्वान किया। सतर्कता जागरुकता सप्ताह के अवसर पर लूहरी जलविद्युत परियोजना चरण-1 के बिथल स्थित कार्यालय परिसर में शपथ ग्रहण का आयोजन किया गया। परियोजना प्रमुख सुनील चौधरी ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अखण्डता की शपथ दिलाई। इस अवसर पर सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपने सभी कार्य क्षेत्र में ईमानदारी एवं कानून के नियमों, पारदर्शिता बनाए रखने तथा जनहित में कार्य करने की शपथ ली। साथ ही अपने निजी आचरण में ईमानदारी दिखाकर भ्रष्टाचार से संबंधित किसी भी घटना की उचित रिपोर्ट करने की प्रतिज्ञा ली।

अस्पतालों में रोगियों की भीड़ घटाने को आरोग्य भारती की विशेष भूमिका : प्रो. एन.के. शारदा

बाख़बर न्यूज
शिमला . बाख़बर कनेक्ट

आरोग्य भारती शिमला द्वारा आयोजित धनवंतरि जयंती आरोग्यश्री सम्मान समारोह कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अपने उद्बोधन में बोलते हुए हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के पूर्व प्रतिकुलपति प्रोफेसर एन. के. शारदा ने कहा कि अस्पतालों में बढ़ती हुई रोगियों की भीड़ घटाने में आरोग्य भारती जैसी संस्थाओं की विशेष भूमिका है।

आरोग्य भारती शिमला द्वारा धनवंतरि जयंती कार्यक्रमों के समारोप समारोह में नवीन पहल करते हुए स्वास्थ्य रक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान करने वाले प्रतिभावान

विभूतियों को आरोग्यश्री पुरस्कार से विभूषित कर सम्मानित किया। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के पूर्व प्रतिकुलपति प्रोफेसर एन. के. शारदा तथा आरोग्य भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राकेश पंडित ने हिमाचल के प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ पी. सी. नेगी, आयुर्वेद क्षार-सूत्र शल्य विशेषज्ञ डॉ अनिल मैहता तथा योगाचार्य श्री लक्ष्मी दत्त शर्मा को आरोग्यश्री पुरस्कार में हिमाचली टोपी, शाल, स्मृति चिन्ह तथा सम्मान पत्र प्रदान कर विभूषित किया । सरस्वती विद्या मंदिर, हिमरश्मि परिसर विकास नगर शिमला में आयोजित इस भव्य समारोह में अपने उद्बोधन में प्रोफेसर शारदा ने आरोग्य भारती द्वारा विशिष्ट सेवा एवं उत्कृष्ट प्रतिभाओं को सम्मानित करने के निर्णय की सराहना करते हुए आगे कहा कि कहा कि आरोग्यश्री जैसे सम्मान से अन्य लोगों को भी प्रेरणा मिलेगी।

आरोग्य भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राकेश पंडित ने बताया कि आरोग्य भारती स्वस्थ रहने के लिए स्वस्थ दिनचर्या के पालन तथा रोगों से बचाव के अंतर्गत विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम , प्राथमिक उपचार , स्वस्थ जीवन शैली, औषधीय वनस्पति प्रचार आदि 24 प्रकार के आयामों के माध्यम से लिए जागरूकता अभियान से देशभर में कार्यरत है।

دنیا جی پی ایس کے بغیر کیا کرے گی؟

گذشتہ برس جب اسرائیل کے بن گورین ائیر پورٹ پر مصنوعی سیارے کی مدد سے سیٹلائیٹ نیویگیشن نظام نے کام کرنا بند کر دیا تو اس وقت ائیر ٹریفک کنٹرول کی مہارت طیاروں کو حادثوں سے محفوظ رکھ پائی تھی۔

سیٹلائیٹس کا بند ہو جانا شاید کوئی حادثہ تھا، جس کی وجہ غالباً روس کی شام میں جنگ کے دوران ریڈیو یا ریڈار سگنل کو کسی دوسرے سگنل کی مداخلت سے روکنے کی ایک مربوط کوشش تھی۔

تاہم اس واقعے نے ایک اہم مسئلے کو اُجاگر کیا اور وہ یہ کہ عالمی گلوبل پوزیشننگ سسٹم یا جی پی ایس مداخلت کا شکار ہو سکتا ہے۔

امریکی شہر آسٹن میں یونیورسٹی آف ٹیکساس کے کمیونیکیشنز انجینیئر ، ٹوڈ ہمفریز کہتے ہیں کہ 'اس وقت جی پی ایس کو محفوظ، زیادہ مضبوط اور بہتر بنانے کی شدید ضرورت کا احساس بڑھ رہا ہے۔' آج کی زندگی میں جی پی ایس ہماری روزمرّہ کی سرگرمیوں کا محور بن چکا ہے۔ اس کی سادہ سی شکل یہ ہے کہ اس کے ذریعے ہمیں یہ معلوم ہوتا ہے کہ جی پی ایس کی لہریں وصول کرنے والا آلہ ایک وقت میں کرہ ارض کے کس حصے میں ہے۔ یہ ہمارے موبائیل فونز میں موجود ہے، ہماری کاروں میں لگا ہوا ہے۔

یہ کشتیوں کو جہاز رانی میں سمتوں سے آگاہ کر کے ان کو سمندری کے مشکل رستوں سے محفوظ طریقے سے گزرنے میں مدد دیتا ہے، یعنی جدید دور کے لائٹ ہاؤس کا کردار ادا کرتا ہے۔ ایمرجنسی سروسز پہنچانے والے ادارے اس کی مدد سے کال کرنے والے کی جگہ تلاش کر کے وہاں پہنچ جاتے ہیں۔ چند ایک اور باتیں جو زیادہ معروف نہیں ہیں ان میں ایک یہ ہے کہ بندرگاہیں اب ان کے بغیر شاید کام ہی نہ کر سکیں کیونکہ ان کے ہاں نصب شدہ کرینیں اب جی پی ایس کی مدد سے کام کرتی ہیں اور وہ سامان کی ترسیل میں کلیدی کردار ادا کرتی ہیں جن کی وجہ سے کاریں بنانے والوں اور سپر سٹوروں کا سامان بہت تیزی سے اپنی منزل کی جانب روانہ ہو جاتا ہے۔

جی پی ایس کے بغیر ہماری سپر مارکیٹوں کے خانے خالی پڑے رہ جائیں اور قیمتیں زیادہ ہو جائیں۔

تعمیراتی صنعت میں جب کسی جگہ کام شروع ہوتا ہے تو زمین کا جائزہ لینے کے لیے جی پی ایس کا استعمال کرتے ہیں۔ مچھیرے اپنے علاقوں میں قانونی حد میں رہنے کے لیے اس سے رہنمائی حاصل کرتے ہیں۔ لیکن جی پی سی صرف اپنی مکان یابی کا ہی ذریعہ نہیں ہے بلکہ یہ وقت کے بارے میں بھی معلومات دیتا ہے۔ اس وقت کرّہِ ارض کے اردگرد تیس کے قریب مصنوعی سیاروں کا یہ جھرمٹ عین ایک طرح کا درست وقت بتانے کے لیے ایٹمی گھڑیوں کا استعمال کرتا ہے تا کہ ایک ہی وقت میں سگنلز جاری ہو سکیں۔ ان کو استعمال کرنے والے اس کی مدد سے ایک سیکنڈ کے اربویں حصے کے وقت کا بھی تعین کر سکتے ہیں۔

موبائل فونز کے نیٹ ورک اپنے اصل زمینی مرکزی سٹیشن کے مطابق وقت کا درست ترین تعین جی پی ایس ہی کے ذریعے کرتے ہیں، جبکہ مالیاتی اور بینکنگ کے نظام کا بھی بروقت درست تجارتی ادائیگیوں اور وصولیوں کے لیے اسی پر انحصار ہوتا ہے۔

ہم اِس سیٹلائیٹ نظام کے بغیر بالکل غیر فعال ہو کر رہ جائیں گے۔ لیکن کیا اس وقت کہیں کوئی ایسا نظام موجود ہے جو اس کی جگہ لے سکتا ہے؟ اور ہم اس موجود نظام کے بغیر کام کر سکیں گے؟ لندن سکول آف اکنامکس کی برطانوی حکومت کے لیے تیار کی گئی ایک رپورٹ کے مطابق ایک سیٹلائیٹ نیویگیشن سسٹم کے پانچ دن تک بند رہنے سے ساڑھے چھ ارب ڈالر کا نقصان ہوگا۔ صرف ایک دن کے لیے نیویگیشن سسٹم کے بند ہونے سے امریکی معیشت کو روزانہ کا ایک ارب کا نقصان ہوگا، اور اگر یہ نقصان اپریل اور مئی کے مہینوں کے فصل بونے کے دنوں میں ہوا تو ایک دن میں اس سے ڈیڑھ ارب ڈالر کا نقصان ہوگا۔

جی پی ایس کے بند ہونے کے واقعات کافی تواتر سے وقوع پذیر ہوتے رہتے ہیں۔۔۔ فوجی حکام مختلف علاقوں میں اکثر و بیشتر کسی نئے آلے کی ٹیسٹنگ یا فوجی مشقوں کے دوران جی پی ایس کے سگنلز کو مداخلت کر کے بند کرتے رہتے ہیں جِسے 'جام' کرنا کہتے ہیں۔

امریکی حکومت خود اکثر و بیشتر ایسے ٹیسٹ یا مشقیں کرتی رہتی ہے جن کے دوران ان سیٹلائیٹس کو 'جام' کر دیا جاتا ہے۔ تاہم بعض اوقات فنی خرابی کی بنا پر بھی سیٹلائیٹ کام کرنا بند کر دیتے ہیں۔

اس میں کوئی شک نہیں ہے کہ دنیا میں اس وقت دوسرے سیٹلائیٹ سسٹم بھی موجود ہیں۔ روس کا گلوناس، یورپ کا گیلیلیو اور چین کا بائی ڈاؤ، یہ سب جی پی ایس کے ساتھ ایک ہی طریقے کے ساتھ کام کرتے ہیں۔ لیکن بڑھتی ہوئی فنی خرابی یا 'جامنگ' مصنوعی سیارے (سیٹلائیٹ) سے مکان یابی کا تعین کرنے والے آلات تک جاری ہونے والے سگنلز میں مداخلت کر کے انھیں غیر موثر کر سکتے ہیں۔

رائل انسٹیٹیوٹ آف نیویگیشن کے فیلو اور فیلڈ میں کام کرنے والے ادارے کورونوس ٹیکنالوجی کے بانی، چارلی کری کہتے ہیں کہ 'اب اکثر و بیشتر فوجی ادارے جامنگ کے خلاف ہیں۔' فوجی اداروں کی تشویش کی وجہ ان کی اپنی ہے۔ سیٹلائیٹ نیویگیشن کا نظام اصل میں امریکی محکمہِ دفاع کے لیے تیار کیا تھا، لیکن اب یہ ہر شے کی رہنمائی کرتا ہے، ڈرونز کی پرواز سے لے کر بحریہ کے جہازوں تک، ایک سمارٹ بم سے لے کر بری فوج کے سپاہی تک۔ اور اب یہ سب کچھ خطرے میں ہے۔

مجرم بھی جی پی ایس کو جام کرنے کی ٹیکنالوجی استعمال کرتے ہیں جو کہ آن لائن ذرائع سے با آسانی دستیاب ہے۔ وہ اس جامنگ کو چوری شدہ کاروں کو پولیس کی پکڑ سے بچانے کے لیے استعمال کرتے ہیں اور اس کی پرواہ بھی نہیں کرتے ہیں کہ ان کی اس حرکت سے کتنے لوگ متاثر ہوں گے۔ اور پھر اس میں اور بھی بڑے خطرات ہیں۔

ہیمفریز کہتے ہیں کہ 'جی پی ایس کے لیے ایک ایسا امکانی خطرہ بھی ہے کہ اس کے پورے آپریشنل سسٹم کے انفراسٹرکچر پر حملے سے اسے غیر فعال کر کے امریکہ کے مالیاتی نظام کو نشانہ بنایا جا سکتا ہے۔' قدرتی آفات بھی اسی طرح کے حالات پیدا کر سکتی ہیں۔ سنہ 1859 کے کیرینگٹن ایونٹ جیسا بڑا شمسی طوفان بھی ایک فوجی حملے کی طرح، پورے کے پورے مصنوعی سیاروں کے نظام کو نیچے لیجا سکتا ہے۔

فرض کریں اگر جی پی سی اور اس سے منسلک دوسری ٹیکنالوجیز اچانک غائب ہو جاتی ہیں - تو دنیا کو معمول کے مطابق چلانے کے لیے ہمارے پاس ان ٹیکنالوجیز کے متبادل کیا ہیں؟

جی پی ایس کا ایک ممکنہ متبادل لانگ رینج نیویگیشن (لورن) کا جدید ورژن ہو سکتا ہے جسے دوسری عالمی جنگ کے دوران بحری جہازوں کو بحرِ اوقیانوس کو عبور کرانے کے لیے استعمال کیا جاتا تھا۔ مصنوعی سیاروں (سیٹلائیٹس) کی جگہ زمین پر 200 میٹرز اونچے نصب شدہ ٹرسمیٹرز جہت یابی (نیویگیشن) کے لیے ریڈیو سگنلز بھیجتے ہیں۔

ابتدا میں لورن ٹیکنالوجی صرف چند میلوں کے فاصلے کے لیے کام کرتی تھی، لیکن 1970 کی دہائی میں یہ چند سو میٹرز کے دائرے میں کسی مقام کی نشان دہی کے قابل ہو گی۔ برطانیہ اور دیگر ممالک نے سنہ 2000 میں جی پی ایس آنے کے بعد، لورن ٹرسمیٹرز کا استعمال ترک کر دیا تھا۔ تاہم اب جدید اور بہتر کارکردگی والی لورن ٹیکنالوجی جسے ای-لورن کہا جاتا ہے، وہ بھی اتنی ہی درست ہو سکتی ہے جتنی کے جی پی ایس۔ یہ نئی ای-

لورن 'ڈیفرینشل کرویکشن' ٹیکنیک کے ساتھ سگنلز جاری کرنے اور وصول کرنے کے جدید قسم کے آلات استعمال کرتی ہے، جس میں سگنلز کا اس کے حوالے سے سٹیشن کے مطابق جائزہ لے کر بہتر کیا جاتا ہے تا کہ اس کا استعمال بالکل درست ہو۔

لورن کے جدید اور بہتر ورژن کے متعلق کہا جاتا ہے کہ یہ 10 میٹر کے فرق سے عین مقام کا تعین کر سکتی ہے۔ جی پی ایس کے برعکس یہ عمارتوں اور تہہ خانوں کے اندر بھی سگنلز پہنچا سکتی ہیں، اس کی بنیادی وجہ یہ ہے کہ یہ سگنلز بھیجنے کے لیے اس میں کم درجہ کی فریکیوینسی اور زیادہ بجلی استعمال کی جاتی ہے۔ ای-لورن کے طاقتور سگنلز کو جام کرنا کافی مشکل ہے۔

ہیمفریز کا کہنا ہے کہ 'ای-لورن ایک زبردست ٹیکنالوجی ہے جو قومی رابطے میں تمام رکاوٹیں دور کر سکتی ہے بشرطیکہ اس کو نصب کرنے اور اس کی دیکھ بھال کا عزم ہو۔'

دیگر طریقوں کے لیے کسی نیا انفراسٹرکچر کی ضرورت نہیں ہوگی۔ ریڈیو کی ایجاد سے کافی پہلے سے بحری جہاز سورج اور ستاروں کی مدد سے اپنی سمتوں کا تعین زاویہِ پیما آلہ کے استعمال سے کرتے تھے۔

آسمان میں ستاروں اور سیاروں کی مدد سے سمتوں کے تعین کا طریقہ جدید دور میں جاری رہا۔ اور حیرانی کی بات تو یہ ہے کہ بیلاسٹک میزائل جیسے ٹرائیڈنٹ ابھی بھی خلا میں موجود اجسامِ فلکی سے پرواز کے دوران اپنی سمت کا تعین کرتے ہیں۔

ستاروں کی مدد سے زمین پر کسی جگہ کا تعین چند ہزار میٹرز کے دائرے کے آس پاس کر سکتے ہیں۔ لیکن حال ہی میں ایک امریکی کمپنی ڈریپر لیبارٹری نے خلا میں گلوبل پوزیشننگ کی نئی اور جدید قسم تیار کی ہے جِسے 'سکائی مارک' کہا جاتا ہے، جو ایک بہت ہی چھوٹی سے دوربین سے، خودکار طریقے، انٹرنیشنل سپیس سٹیشن اور زمین اور ستاروں کے ارد گرد دیگر مدار میں چکر لگانے والے اجسام سے سیاروں کے مداروں کی سمتوں کو جانچ لیتی ہے۔

آسمان میں لاتعداد تیزی سے متحرک اشیا سے سکائی مارک بنا کر پرانے زمانے کے آہستہ آہستہ حرکت کرنے والے ستاروں سے کہیں زیادہ درست سمت کی نشاندہی کر سکتے ہیں۔

سکائی مارک نظر آنے والے مردہ اور زندہ سیاروں کا ڈیٹا استعمال کرتے ہیں اور کسی جگہ کو 15 میٹر دائرے کے اندر کی درستگی کے مطابق تعین کرتے ہیں، جو کہ جی پی ایس کی طرح درست ہے۔ ڈریپر کمپنی کے انجینیئر اور گروپ لیڈر بینجمن لین کہتے ہیں کہ بعض اوقات یہ اس سے بھی زیادہ درست ثابت ہو سکتی ہے، لیکن اس بات کا انحصار اس چیز پر ہوتا ہے کہ یہ بیک وقت کتنے سیارے دیکھ پاتی ہے۔

بینجمن کہتے ہیں کہ 'اجسام فلکی کی مدد سے نیویگیشن ایک یا دو میٹرز کی درستگی سے کی جا سکتی ہے۔ اس میں صرف ایک ہی مسئلہ ہے اور وہ یہ کہ کون سا سیارہ ریفرنس کی بنیاد ہے۔'

اس میں ایک اور قباحت یہ ہے کہ یہ ٹیکنالوجی صرف صاف آسمان کی صورت میں کام کرتی ہے۔ نظر آنے والی لائٹ کی بجائے انفرا ریڈ لائٹ کو استعمال کیا جاتا ہے جو کہ بادلوں کے درمیان سے با آسانی گزر جاتی ہے، تاہم شمالی اور جنوبی قطبوں میں جہاں گہرے سیاہ بدل بہت زیادہ ہوتے ہیں، اس کا کوئی خاص فائدہ نہیں ہوتا ہے۔ شاید روزمرہ کے کام کرنے کے لیے خود کارانہ رہنمائی (انرشیل نیویگیشن) جمودی جہت یابی کے لیے استعمال ہو سکے، جو گاڑی کی رفتار اور اس کی سمت جاننے کے بعد اس کے مقام کا تعین کے لیے ایکسیلو رومیٹرز کے سیٹ استعمال کرتی ہے۔ اس کے اصل ماڈلز اس وقت کافی زیادہ زیرِ استعمال ہیں۔ کری کہتے ہیں کہ 'جب آپ کی گاڑی کسی سرنگ سے گزرتی ہے اور آپ کا جی پی ایس سگنلز کھو بیٹھتا ہے تو اس وقت یہ انرشیل نیویگیشن ہوتی ہے جو آپ کو پوزیشن سے آگاہ رکھتی ہے۔'

انرشیل نیویگیشن کا مسئلہ یہ ہے کہ یہ ایک جگہ نہیں ٹھہرتی پاتی، اس کا اپنے حساب سے تعین شدہ مقام بدلتا رہتا ہے اور یہ درست نہیں رہتا اور غلطیاں ہونے لگتی ہیں، اس لیے انرشیل نیویگیشن جو آپ کی کار میں لگا ہوتا ہے یہ جی پی ایس کے تھوڑی دیر کے لیے بند ہونے کے بعد کچھ عرصے کے لیے ہی ٹھیک رہتا ہے۔

اس کے ایک جگہ نہ ٹھہر پانے کے نقص پر کوانٹم سینسرز نصب کرنے سے بہت حد تک قابو پایا جا سکتا ہے۔ کوانٹم کی دنیا میں ایٹمز اور ذرات مادّے اور لہروں کا سا رویہ اپناتے ہیں اور ایکسلیریشن ان کی خصوصیات کے اس رویہ کو بدل دیتی ہے۔

فرانس کی ایک کمپنی 'آئی ایکس بلیو' اس ٹیکنیک کا استعمال کرتے ہوئے جی پی ایس کے مقابلے کی سطح کی ایک مشین تیار کر رہی ہے، جبکہ امپیریل کالج لندن کی ایک ٹیم لیزر سپیشلسٹ 'ایم سکوئیرڈ' کے ساتھ کام کر رہی ہے اور انھوں نے سنہ 2018 میں پورٹیبل کوانٹم ایکسیلیرسٹر کا ایک نمونہ تیار کیا تھا۔

اس قسم کے کوانٹم سینسرز ابھی تک لیبارٹیوں کی حد تک محدود ہیں اور کمرشل سطح پر ایک قابلِ استعمال پراڈکٹ بننے میں ابھی کافی وقت لگے گا۔ آپٹیکل نیویگیشن شاید جلد ہی مارکیٹ میں آ جائے، اس میں کیمرے کے ذریعے عمارتیں، چوراہے وغیرہ جیسے زمینی نشانات کو نیویگیشن کے لیے استعمال کیا جاتا ہے۔ اس کا ایک نمونہ، 'ڈیجیٹل سین میچنگ' کروز میزائلوں کے لیے کچھ عرصہ پہلے تیار کیا گیا تھا۔

'امیج نیو' امریکی سائنسدانوں نے امریکی ائیر فورس کے لیے تیار کیے، یہ طیاروں کے لیے ایک جدید ترین آپٹیکل نیویگیشن سسٹم ہے۔ اس میں ایک خطے کی زمین کا پورا ڈیٹا بیس ہوتا جو کیمرے کی ویڈیوز سے موازنہ کرتا ہے اور اصل مقام کا تعین کرتا ہے۔ 'امیج نیو' کا کئی جہازوں پر کامیاب ٹیسٹ ہو چکا ہے لیکن ان کو کاروں پر بھی استعمال کیا جا سکتا ہے۔

سویڈن کی ایک کمپنی 'ایورڈرون' نے پہلی مرتبہ ہسپتالوں کے درمیان سامان کی ترسیل ڈرونز کے ذریعے بغیر ڈاکٹروں کے کی۔ ان کا سسٹم آپٹیکل ڈیٹا۔۔۔ جو کیمرہ دیکھتا ہے وہ اس کی رفتار کا تعین کرتا ہے۔۔۔ اور زمین پر نظر آنے والی تصویروں کا اپنے ڈیٹا سے موازنہ کر کے منزل ایک جی پی ایس کی طرح تلاش کرتا ہے۔

بلاشبہ اس طریقے میں جس علاقے میں منزل کو ڈھونڈنا ہے اس علاقے کی درست تصویروں کا ڈیٹا پہلے سے موجود ہونا ضروری ہے، جس کے لیے مسلسل ڈیٹا کو بہتر کرتے رہنا اور طاقتور میموری کی ضرورت ہے۔

برطانیہ وقت کی ہم آہنگی کے لیے ایک متبادل تیار کر رہا ہے جو کہ جی پی ایس نیشنل ٹائمنگ سینٹر پروگرام کی صورت میں ڈیٹا مہیا کرے گا، جو کہ دنیا کی سب سے پہلی سروس ہوگی۔ جب یہ سنہ 2025 میں قابلِ استعمال بن چکا ہوگا یہ برطانیہ میں مختلف مقامات پر لگائی گئی ایٹمی گھڑیوں کا ساتھ وابستہ ہو جائے گا اور کیبل کے ذریعے سگنلز جاری کرے گا۔

اس کا مقصد یہ ہے کہ اگر سیٹلائٹ سگنلز غیر فعال ہو جاتے ہیں، اور ایسی صورت میں جب مرکز غیر محفوظ ہو جائے، پھر چاہے وہ کسی حملے کی وجہ سے ہو، فنی خرابی کی وجہ سے، سائبر حملے کی وجہ سے یا صرف ایک حادثے کے باعث، تو یہ متبادل کے طور پر استعمال ہو سکے گا۔

اس کا مطلب ہے کہ جی پی ایس جیسے سیٹلائیٹ نیویگیشن سسٹم کی جگہ کوئی ایک سسٹم نہیں لے گا اور شاید ہم مختلف قسم کے سسٹم ملا جلا کر استعمال کریں، بحری جہازوں کے لیے کوئی اور تناسب ہو، طیاروں کے لیے کچھ اور ہو اور کاروں کے لیے کچھ اور ہو۔

امریکہ کا محکمہ مواصلات اس وقت جی پی ایس کے موزوں متبادل کے انتخاب کے لیے تحقیق کر رہا ہے۔ اصل سوال یہ ہے کہ آیا مستقل قریب میں کوئی متبادل جلد تیار ہو جائے گا یا نہیں۔ کری کا کہنا ہے کہ 'اب اس مسئلے کے بارے میں ایک احساس پیدا ہو رہا ہے لیکن پیش رفت اب بھی بہت ہی آہستہ رفتار سے ہو رہی ہے۔' ہم اب بہت زیادہ مکمل درست نیویگیشن کے عادی ہوتے جا رہے ہیں۔ خودکار ڈرائیو کرنے والی کاریں، سامان کی ترسیل کرنے والے ڈرونز، پرواز کرنے والی ٹیکسیاں یہ سب کچھ ایک دہائی تک آپ کو نظر آئیں گی۔ اور یہ سب کے سب جی پی ایس پر انحصار کریں گے۔

کری کا خیال ہے کہ کوئی شخص، کسی مناسب جگہ پہ بیٹھ کر، کسی طاقتور جامر کے ذریعے لندن جیسے بڑے شہر کے جی پی ایس کو غیر فعال کر سکتا ہے۔ جب تک ایک موثر قسم کا متبادل نظام تیار نہیں ہو جاتا، شاید پورا شہر کسی بھی وقت صرف ایک کِلِک کے ذریعے مکمل طور پر بند ہو سکتا ہے۔

سورس : بی بی سی اردو

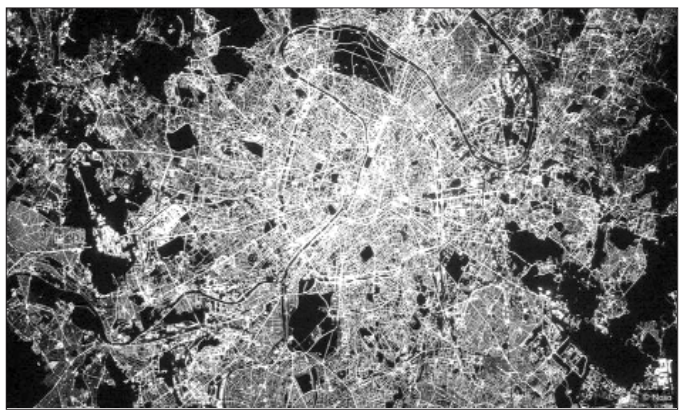

How to Protect Newborns in Cold Weather

Winter is coming, but who wants to stay all cooped up in the house? For new moms, you'll probably get a bit stir crazy with your little one, especially during the cold weather months.

Dress your baby in layers : If you are comfortable with a jacket on top of your clothes, you should have your baby in a jacket or snowsuit and a blanket. The bottom layer can be snug, like leggings and a bodysuit. On top of that, you can put another layer of pants and a long sleeve shirt. Finish up with a jacket, hat, mittens, and warm booties to keep hands and feet warm!"

Ditch the coat in the car : Taking off your baby's coat in the car may seem counterintuitive. But the problem with that cute puffy coat is if there's too much material between the baby and the car seat straps, the material could compress during an accident, leaving space for your baby to become unsecured.

Bundle up for a jaunt outside : If the temperature or windchill dips below freezing, or if nonfreezing temperatures are mixed with wind or rain, keep your little one inside except for brief excursions, like to and from the car. If it's not arctic outdoors, dress him in a winter jacket, a hat that covers his ears, mittens, and a stroller blanket or bunting.

राज्यपाल ने भुन्तर स्थित एकीकृत नशामुक्ति एवं पुनर्वास केन्द्र का दौरा किया

निशा देवी
कुल्लू . बाख़बर कनेक्ट

राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने आज कुल्लू जिला के भुन्तर स्थित प्रदेश में महिलाओं के लिए पहले एकीकृत नशामुक्ति एवं पुनर्वास केन्द्र का दौरा किया।

उन्होंने वहां कार्यरत परामर्श चिकित्सकों से वहां प्रदान की जा रही सुविधाओं व अन्य विषयों पर जानकारी प्राप्त की और केन्द्र में उपचाराधीन लोगों से बातचीत भी की।

राज्यपाल ने उनके द्वारा बनाई गई पेंटिंग का अवलोकन भी किया और उनके प्रयासों की सराहनाकी।

इस अवसर पर उपचाराधीन लोगों से बातचीत करते हुए राज्यपाल ने उन्हें अपनी गलतियों को सुधारने, स्वस्थ जीवन अपनाने के लिए स्वयं को प्रेरित करने तथा सकारात्मक सोच के साथ घर वापस लौटने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि यहां उपचाराधीनलोगों को स्वयं को किसी न किसी कार्य में व्यस्त रखना चाहिए क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति उनकी सहायता के लिए तत्पर है।

इस परिसर में लड़कों के लिए 20 बिस्तर क्षमता का अलग पुनर्वास केन्द्र स्थापित किया गया है जबकि महिला केन्द्र की क्षमता 15 बिस्तर की है। महिला केन्द्र की देख-रेख जिला रेडक्रॉस सोसायटी द्वारा की जा रही है। यह भी बताया गया कि 29 जून, 2022 से संचालित किए जा रहे इस केन्द्र में 140 महिलाएं ओपीडी सुविधा प्राप्त कर रही हैं और उनका नि:शुल्क उपचार किया जा रहा है।

इस अवसर पर उपायुक्त आशुतोष गर्ग और पुलिस अधीक्षक गुरदेव शर्मा सहित अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे।

इससे पूर्व राज्यपाल ने मनाली के सुप्रसिद्ध हिडिम्बा मंदिर में पूजा-अर्चना की और ऋषि विशिष्ठ के मंदिर में भी शीश नवाया।

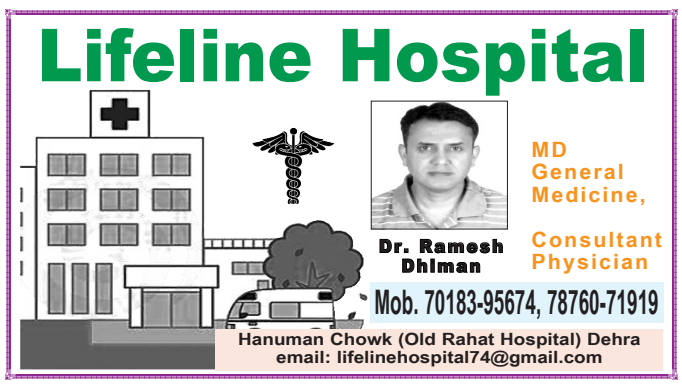

ई-कैच के माध्यम से रखी जा रही है चुनावी व्यय पर नजर : डॉ. निपुण जिंदल

अजय कश्यप
धर्मशाला . बाख़बर कनेक्ट

विधानसभा चुनाव के दौरान जिला कांगड़ा में आदर्श आचार संहिता को प्रभावी ढंग से लागू करने को लेकर जिला निर्वाचन अधिकारी व उपायुक्त डॉ निपुण जिंदल ने बुधवार को जिले में विभिन्न नाकों का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने एसएसटी और फ्लाइंग टीमों की कार्य प्रणाली का जायजा लिया। उपायुक्त ने पालमपुर, नगरोटा और धर्मशाला निर्वाचन क्षेत्र में नाकों पर तैनात टीमों का निरीक्षण कर वहां तैनात अधिकारियों-कर्मचारियों को पूरी मुस्तैदी से काम करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि वे अपने कार्यों को पूरी जिम्मेदारी से करें। किसी भी संदिग्ध वाहन की तत्काल चेकिंग करें और अनाधिकृत नकदी, शराब व हथियार की रिपोर्ट संबंधित अधिकारियों को दें। निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण चुनाव संपन्न करवाने में एसएसटी और फ्लाइंग टीमों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

इसके साथ ही डॉ. निपुण जिंदल ने जिला में विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों में आयोजित मतदान कर्मियों की पहली चुनावी रिहर्सल का भी जायजा लिया। उन्होंने बताया कि जिला कांगड़ा में आदर्श चुनाव संहिता कि कानूनों को लागू करने के लिए स्टेटिक सर्विलांस टीमों द्वारा नाके स्थापित किए गए हैं। उन्होंने कहा कि ई-कैच के आंकड़ों के अनुसार चुनाव की घोषणा के बाद से अब तक 1801 नाके एसएसटी द्वारा स्थापित किए जा चुके हैं और 33685 वाहनों की जांच की जा चुकी है। उन्होंने कहा कि उनके द्वारा निरंतर इन नाकों का औचक निरीक्षण किया।

उन्होंने बताया कि कांगड़ा जिले में चुनावों के बेहतर प्रबंधन के लिए जिला प्रशासन ने एक अभिनव पहल करते हुए ई-कैच ऐप (कांगड़ा एप्लीकेशन फॉर ट्रैकिंग चुनाव) तैयार की है। इस ऐप की मदद से फील्ड में तैनात विभिन्न निगरानी दलों के कामकाज को आसान और अधिक प्रभावी बनाने की व्यवस्था की गयी है। साथ ही जिलेभर में तैनात विभिन्न चुनाव निगरानी दलों में बेहतर समन्वय और उनके काम काज पर नजर रखने में भी ये ऐप सहायक है।

80 वर्ष से अधिक, दिव्यांग व आवश्यक सेवाओं में तैनात कुल 5493 मतदाता करेंगे बैलेट पेपर से वोट

शिमला : जिला शिमला में 80 वर्ष से अधिक आयु, दिव्यांग तथा आवश्यक सेवाओं में तैनात कुल 5493 मतदाताओं ने मतपत्र से वोट डालने के लिए 12-डी फॉर्म भर कर आवेदन किया है। यह जानकारी देते हुए जिला निर्वाचन अधिकारी व उपायुक्त शिमला आदित्य नेगी ने कहा कि चौपाल विस क्षेत्र में 80 वर्ष से अधिक आयु के 281 तथा दिव्यांग श्रेणी से 52 मतदाताओं, ठियोग विस क्षेत्र में 80 वर्ष से अधिक 852 व दिव्यांग श्रेणी में 114, कुसुम्पटी विस क्षेत्र में 80 वर्ष से अधिक 562 व दिव्यांग श्रेणी में 172, शिमला शहरी विस क्षेत्र में 80 वर्ष से अधिक 253 व दिव्यांग श्रेणी में 22, शिमला ग्रामीण विस क्षेत्र में 80 वर्ष से अधिक 557 मतदाताओं व दिव्यांग श्रेणी में 61, जुब्बल-कोटखाई विस क्षेत्र में 80 वर्ष से अधिक 766 व दिव्यांग श्रेणी के 126 मतदाताओं, रामपुर विस क्षेत्र से 80 वर्ष से अधिक 628 व दिव्यांग श्रेणी में 131 तथा रोहड़ू विस क्षेत्र में 80 वर्ष से अधिक 736 तथा दिव्यांग श्रेणी में 123 मतदाता बैलेट पेपर से मतदान करेंगे।

चुनाव पर्यवेक्षकों ने नोडल अधिकारियों के साथ की बैठक

धर्मशाला : हिमाचल प्रदेश विधान सभा चुनाव-2022 को लेकर कांगड़ा जिले के लिए भारत निर्वाचन आयोग द्वारा नियुक्त पर्यवेक्षकों ने मंगलवार को चुनाव से जुड़े नोडल अधिकारियों के साथ बैठक की। उपायुक्त कार्यालय सभागार में आयोजित इस बैठक में सामान्य पर्यवेक्षक आईएएस अधिकारी भुवनेश प्रताप सिंह, दुष्मंत कुमार बेहेरा, किरपा नंद झा और वरजेश नरैण उपस्थित रहे। वहीं पुलिस पर्यवेक्षक आईपीएस अधिकारी लता मनोज कुमार भी बैठक में मौजूद रहीं । इस मौके जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त डॉ. निपुण जिंदल, पुलिस अधीक्षक कांगड़ा खुशाल शर्मा व पुलिस अधीक्षक नूरपुर सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

मंडी में विधानसभा चुनावों में ड्यूटी देने वाले कर्मियों को किया गया प्रशिक्षित

देवेन्द्र कश्यप
मंडी . बाख़बर कनेक्ट

विधानसभा चुनावों को निष्पक्ष एवं सुचारू रूप से करवाने के लिए चुनाव से पहले मंडी विधानसभा क्षेत्र के मतदान कर्मियों की पहली चुनावी रिहर्सल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मंडी में आयोजित की गई। इसमें पीठासीन अधिकारियों, सहायक पीठासीन अधिकारियों को चुनावी कार्यों की बारीकियां बताई गई। दूसरी चुनावी रिहर्सल आगामी 5 नवम्बर को आयोजित की जाएगी।

सहायक रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम सदर रीतिका जिंदल ने बताया कि हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव-2022 के मंडी विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र से तैनात मतदान कर्मियों की पहली चुनावी रिहर्सल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मंडी में आयोजित की गई। इस चुनावी रिहर्सल में कुल 894 मतदान कर्मियों एवं 12 सेक्टर अधिकारियों ने भाग लिया। इस दौरान 20 महिला मतदान कर्मियों तथा 12 दिव्यांग कर्मियों ने भी भाग लिया। सहायक निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि चुनाव आयोग के निर्देशानुसार मंडी विधानसभा क्षेत्र में इस बार दो मतदान केंद्र ऐसे स्थापित किये जा रहे हैं जिनका संपूर्ण संचालन महिला मतदान कर्मियों द्वारा ही किया जाएगा जबकि सुरक्षा कर्मी के तौर पर भी महिलाएं ही तैनात रहेंगी। इसके अतिरिक्त मंडी में एक मतदान केन्द्र में दिव्यांग कर्मी ही मतदान प्रक्रिया को पूरा करेंगे। इसके लिए दिव्यांग कर्मियों और महिला कर्मियों की इस चुनावी रिहर्सल में शामिल किया गया।

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक **हेमराज हरनोट** द्वारा वायलट हिल, जाखू, शिमला-1 से प्रकाशित एवं **दुर्गा पेपर कन्वर्टरज़**, कांशी भवन, तारादेवी, शिमला-10, जिला शिमला (हि.प्र.) से मुद्रित। सम्पादक : **हेमराज हरनोट।**
बाख़बर कनेक्ट से सम्बन्धित सभी मामलों का निपटारा न्यायिक अधिकार क्षेत्र शिमला में ही होगा। फोन नं. 094185-88654, email: bakhabarconnect@gmail.com, Post Box No. 86, Shimla-1, H.P.